गुम्पी डूंसो लोम्बि की दो कविताएँ

(1)

घर

पहाड़ों के बीच मेघों की बोली
कुसुमों की टोली,
अपनी भाषा में गीत गाती...

गौधूलि की आहट,
तर-तर करती संध्या
चेष्टाओं से वापस बुलाती,
यह आभास कराती,
कि यही तो वह आँगन है
कि यही तो वह फुलवारी है
जहाँ से हमने देखी दुनिया
प्रकृति की दुनिया !

सूर्य की इस भूमि में,
प्रकृति से आलिंगन की गाथा
कहती है अपनी व्यथा,
कि यही तो वह घर है
जहाँ से पर्वत श्रृंखलाओं का आरोहण कर
दोङ[1] से सर्वप्रथम देश में
सूर्योदय होने की क्षणज्योति कराती
आन्अ-दोञी[2] है !

पहाड़ों के बीच मेघों की बोली
कुसुमों की टोली
अपनी भाषा में गीत गाती।

---

(2)

गेकर-सिञिंग और दोइमुख में प्रेम

गेकर-सिञिंग और दोइमुख में प्रेम है
महका-महका बहार है,
मैं रहता हूँ गेकर-सिञिंग के पास
दोइमुख मेरी रहती है निर्जुली के पास,
चंदन साँप से नहीं भीड़ से लिपटी है
और भीड़ चंदननगर में भी रहती है,
चिम्पु, थिम्पू जैसा होता
सड़क के किनारे महल नहीं बनता
सही समय पर गंगा पहुँचता,
गंगा बह नहीं रही है
आकाश-द्वीप के समीप खड़ी है
भीड़ से जकड़ी है
स्थानीय उत्पादों को बेच रही है,
कचरा खूब जम रहा है
गंगा मैया भी सह रही है,
गेकर-सिञिंग और दोइमुख में प्रेम है
महका-महका बहार है,
दोइमुख मेरी फोन करी
मैंने बताया बैंक तिनाली,
नीचे विवेक विहार ऊपर ईटाफोर्ट दिख रहा है
आहुम का इतिहास कह रहा है,
ट्रेकर में बैठकर दूर से गोम्पा निहार रहा हूँ
अभी जीरो प्वाइंट पर चढ़ रहा हूँ,
चालक की अपनी स्टाइल होती है
पलक-झपक कर पहलवान मोड़ पर आबोतानी से
मिलना होता है,
कुछ समय में मौसी भी दिख जाती है
सब्जियों के साथ मन भी बहल जाता है

गेकर-सिञ्चिंग और दोइमुख में प्रेम है
महका-महका बहार है,
पप्पू नहीं पापु-नाला
किसी जमाने में
शीतलता का अनुभव हुआ होगा
अब वाकई में नाला बन चुका,
गंदगी से समझौता कर चुका है
रास्ता युपिया से भी है
मगर बाजार नाहरलागुन के ही सस्ते हैं
जहाँ एक साथ में सब बिकते हैं
गेकर-सिञ्चिंग और दोइमुख में प्रेम
महका-महका बहार है,

अब मैं रोऊंगा
दोइमुख मेरी रोएगी,
क्योंकि ट्रैफिक रोएगा,
अब हाथी का कोई सिर नहीं रहा
केवल हाथी माथा रहा,
दिल्ली में-
"बारापुला फ्लाइओवर न होता तो साउथ एक्स
और
सराय काले खाँ की दूरी कम न होती"*
हाथी माथा से ए-सेक्टर तक फलाइओवर होता तो
ट्रैफिक रोता नहीं,
मैं स्वप्न में खो गया था
क्योंकि ट्रेफिक रो रहा था,
फ्लाइओवर मात्र स्वप्न है
स्वप्न देखना बुरा नहीं
बुरा तो एनक्रोचमेंट,
स्वयं का एनक्रोचमेंट,
सरकारी टेबल पर बैठकर
सरकार को बेचना,
स्वयं को बेचना
अब सरकारी नियम
मात्र नियम ही रह गया
गेकर-सिञ्चिंग और दोइमुख में प्रेम है
महका-महका बहार है,
ताकार कॉम्पलेक्स का इतिहास पुराना है
बगल में ट्रेकर से उतरना है,
ट्रिम्स को देखकर
बचपन अपनी याद आता है,
एक सुई के लिए एक कमरा में रोते-रोते जाना
और आज कमरे-कमरे भटकना,
गेकर-सिञ्चिंग और दोइमुख में प्रेम है
महका-महका बहार है,
नाहरलागुन की सब्जी-मंडी का कूड़ा
और मन का बुरा होना
तय है,
दोइमुख से मिलने का अफसाना
फिर टेम्पो में बैठ जाना
उपहार लेना
लेकिन टेम्पो में बैठकर
दाएं-बाएँ
सिर पर गूमड़ नहीं बनाया तो कुछ नहीं बनाया,
कूद-कूद कर निर्जुली पहुँचना
फिर कुछ पल मौन होना,
किसी ने कहा था
किसी जमाने में
बागे कोई आया था,
यहाँ पहले बसा था
उन्हीं से जुड़ा नाम
बागे तिनाली रखा था,
गेकर-सिञ्चिंग और दोइमुख में प्रेम है
महका-महका बहार है,
दोइमुख से मिलूंगा,
प्रेम की बातें करूंगा,

दिकरोङ की हवाएँ चलेंगी
ऊपर रोनो-पुतु आशीष देगा
लेकिन मन भर गया
गेकर-सिञिंग और दोइमुख की जमीं
खुश नहीं है
मानव, मानव पर बोझ है
शरीर नहीं, मन मलिन है,
गेकर-सिञिंग और दोइमुख में प्रेम
बना रहे सदियों-सदियों तक
दोइमुख से मिला
उपहार दिया
गेकर-सिञिंग लौटा
दोइमुख भी बदल गई थी वैसी नहीं थी,
गेकर-सिञिंग और दोइमुख में प्रेम है
महका-महका बहार है,

.....

दोङ– अरुणाचल प्रदेश के अंजाव जिला तथा भारत, चीन और म्यानमार सीमा में स्थित एक गाँव है, जहाँ से भारत देश में सर्वप्रथम सूर्योदय होता है।

आन्अ-दोञी- आन्अ यानी माँ तथा दोञी यानी सूर्य। अरुणाचल प्रदेश के तानी समूह की जनजाति सूर्य को माता कहती है।

* "बारापुला फ्लाइओवर न होता तो साउथ एक्स और सराय काले खाँ की दूरी कम न होती"- यह पंक्ति रवीश कुमार की लिखी पुस्तक इश्क में शहर होना से ली गई है।

*(**लेखकीय परिचय** : गुम्पी डूसो लोम्बि अरुणाचल राज्य की प्रथम हिंदी अधिकारी के रूप में सम्मानित हुई हैं तथा वर्तमान में राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश में अपनी सेवाएँ दे रही हैं। आपकी अरुणाचल प्रदेश की लोक-कथाओं पर केंद्रित पुस्तक 'यापोम-गालो लोक-कथाएँ' काफी चर्चित रही है। आप वर्तमान में राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में शोधार्थी भी हैं। मोबा: 9233992844, ई-मेल : rguho123@gmail.com)*